गिरफ्तारियों का दौर है; हर एक रीढ़ परखी जाएगी

क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा

भाजपा, आगामी विधान सभा तथा लोकसभा चुनाव हारने जा रही है। भीत पर लिखा हुआ, सबको साफ़ नज़र आ रहा है। पुलवामा न हुआ होता, तो 2019 का चुनाव भी ना जीत पाते। इन्हें, लोगों को धर्म के नाम पर बांटने, भोले-भाले लोगों को झांसे देने और कॉर्पोरेट आक़ाओं के सामने, लहालोट हो जाने के अलावा कुछ आता ही नहीं। हिन्दू-मुस्लिम वाला ज़हरीला खेल, बहादुर मेवातियों और किसानों ने फेल कर दिया है। दोनों को बार-बार सलाम करने को दिल करता है। इस फासिस्ट टोले की बाज़ीगरी, लोग समझ गए, कलई खुल चुकी।

इदारे के अंदर भगदड़ मचने को तैयार है। ज़िल्ले इलाही को कुछ नहीं सूझ रहा, बौखलाए हुए हैं। इसीलिए सवाल पूछने की 'जुर्रत' करने, रीढ़ सीधी कर के चलने वाले, पत्रकारों/ लेखकों की गिरफ़्तारी का सीजन शुरू हो गया है। हर तानाशाह, इतिहास के कूड़ेदान में जाने से पहले बिलकुल यही करता है। इस फ़ासिस्ट दमन-चक्र का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए 4 अक्टूबर को जंतर मंतर पर देश के सभी वामपंथी छात्र-युवा संगठनों तथा प्रेस क्लब पर वकीलों द्वारा शानदार विरोध प्रदर्शन हुए। निज़ाम को समझ आ जाना चाहिए कि देश में ऐसे लोगों का भी न अकाल पड़ा है और न पड़ेगा जिनकी रीढ़ महफ़ूज़ है और जो ऊंची आवाज़ में सच को सच और बकवास को बकवास कहते हैं। देश को तोड़ने, कमजोर करने वाले और जोड़ने, मज़बूत करने वाले लोग और इदारे कौन से हैं सारा देश ही नहीं बल्कि सारी दुनिया अच्छी तरह जान चुकी है। हक़ीक़त को अगर समझ जाए और सारे समाज को डंडे से हांकने के ख़्वाब छोड़ दे तो वो फ़ासिस्ट नहीं हो सकता। अप्रैल 1945 सभी को याद है जब जनरल कॉमरेड झुकोव तथा जनरल कॉमरेड इवान कोनेव के नेतृत्व में सोवियत लाल सेना की दो टुकडियां बर्लिन पहुंचने के लिए आपस में रेस कर रही थीं, कि जर्मन संसद राईसटैग पर लाल झंडा कौन पहले फहराएगा। उसी वक़्त दूसरी ओर, चूहे की तरह अपने बिल में घुसा हिटलर बड़बड़ा रहा था, जर्मन मास्टर रेस है, हम कैसे हार सकते हैं!!

"मंगलवार, 3 अक्टूबर को, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और मुंबई में कुल 50 ठिकानों पर छापेमारी की गई जिनमें कुल 37 पुरुष संदिग्धों तथा 9 महिला संदिग्धों से पूछताछ की गई.."। पुलिस की भाषा पर गौर कीजिए, 'संदिग्ध'!! जिसके भी घर सुबह 5 बजे पुलिस घंटी बजा दे वही संदिग्ध है!! पुलिस के रिकॉर्ड से ही जाएं तो आरोपी न्यूज़ पोर्टल 'न्यूज़ क्लिक' है। उससे जुड़ा हर व्यक्ति 'संदिग्ध' कैसे हो गया?

उनके मुंह से जो निकल जाए वही सदाक़त है!! 'न्यूज़ क्लिक' के प्रधान संपादक प्रबीर पुरकायस्थ तथा मानव संसाधन प्रमुख अमित चक्रवर्ती को बर्बर क़ानून यूएपीए के तहत गिरफ्तार किया गया है। सभी पत्रकारों को अब ये अच्छी तरह समझ आ जाना चाहिए कि यूएपीए लग गया तो इसका मतलब वह व्यक्ति आतंकवादी है, जघन्य अपराधी है, देश को तोड़ डालना चाहता है, बग़ावत कर डालना चाहता है, ऐसा बिलकुल भी नहीं है। असभ्यता के प्रतीक इस क़ानून का एक ही मक़सद है जिस किसी को भी हुकुमत जेल में बंद रखना चाहती है जब तक चाहे जेल में बंद रख सकती है। इस काले क़ानून में गिरफ़्तारी के बाद 'लोकतंत्र की मां' के दिए सभी जनवादी अधिकार छिन जाते हैं।

पूछताछ में पूछे गए सवालों से ज़ाहिर हो जाता है कि चोर ये पत्रकार हैं जिन्हें पुलिस उठाकर ले गई या वह निज़ाम है जिसके इशारे पर पुलिस और ईडी भरतनाट्यम कर रहे हैं। क्या आप शाहीन बाग आंदोलन स्थल गए थे? क्या आपने दिल्ली 'दंगे' कवर किए हैं? क्या आप किसान आंदोलन के दौरान किसान मोर्चों में गए थे? कोई पुलिस से पूछे, क्या देश में संविधान लागू है? क्या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का इस्तेमाल किया जा सकता है या ये लिखने मात्र की ही बात है? 'हम लोकतंत्र की मां हैं' मोदी द्वारा हर विदेश यात्रा पर दोहराया जाने वाला यह वाक्य क्या एक क्रूर जुमला नहीं है? दिल्ली दंगों के नाम पर हुई प्रायोजित हिंसा पर अगर अदालत की टिप्पणियों को एक साथ पढ़ा जाए तो कोई संदेह नहीं रहेगा कि जब 'नागरिकता संशोधन विरोधी' शानदार आंदोलनों को कुचलने में सरकार नाकाम हो गई तो दिल्ली पुलिस और भाजपा के लगुवों-भगुवों ने षडयंत्र के तहत मुस्लिम समाज के विरुद्ध हिंसा भड़काई। दिल्ली 'दंगों' के प्रमुख सूत्रधार हैं; कपिल मिश्रा, प्रवेश वर्मा और अनुराग ठाकुर। क्या दिल्ली पुलिस में उन्हें गिरफ्तार करने की हिम्मत है?

प्रेस क्लब पर प्रदर्शन कर रहे वकील और सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ता; जंतर मंतर पर विरोध कर रहे छात्र और सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ताओं के स्थल जंतर मंतर तक जुलुस लेकर आना चाहते थे लेकिन पुलिस ने अनुमति नहीं दी। फिर भी, लेकिन अधिकतर लोग शाम को जंतर मंतर पर इकट्ठे हो गए। वहां भी फ़ासिस्ट टोला अपनी घिनौनी हरक़त से बाज़ नहीं आया। दरअसल, अनेक दरबारी गोदी चैनल; फ़ासिस्टों की छोटी-छोटी नाज़ी टुकड़ियों की तरह काम करते हैं। 'सुदर्शन न्यूज़' इस घृणित खेल में सबसे आगे है। इस भगवे आतंकी चैनल की एक छोटी टुकड़ी जंतर-मंतर प्रोटेस्ट को 'कवर' करने के बहाने बिखंडा डालने पहुंच गई।

छात्रों ने घेरकर उनसे सवाल करने शुरू किए तो उनसे बोलते नहीं बना और 'सुदर्शन न्यूज़' वाली यूनिट, पुलिस के घेरे में छुप गई लेकिन थोड़ी देर बाद फिर ख़ुद को पीड़ित बताते हुए डिस्टर्ब करने पहुंच गई। छात्र षडयंत्र समझ गए और उन्हें फिर वहां से भागना पड़ा लेकिन आक्रोश सभा को डिस्टर्ब करने में तो वे क़ामयाब हो ही गए।

एन जी ओ का गोरखधंधा

मज़दूरों की मज़दूरी का एक बड़ा हिस्सा हड़प कर विशालकाय मगरमच्छ सरमाएदार 'जन-कल्याण' के नाम पर उस लूट का एक महीन हिस्सा 'कल्याणकारी' कामों के लिए 'दान' देते हैं। यह एक बहुत ही ख़तरनाक गोरखधंधा है। इन लुटेरे 'दानियों' में से कई ख़ुद को 'वामपंथी एवं प्रगतिशील' भी कहलवाते हैं। इन सभी एनजीओबाज़ों का मक़सद है शोषित-पीड़ित मज़दूर वर्ग को इस लुटेरी, खुनी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने से रोके रखना। क्रांतिकारियों का काम मुश्किल बनाना। बिल गेट्स हो या अज़ीम प्रेमजी ये सब सरमाएदार लुटेरे हैं। पूंजी; श्रमिकों के श्रम का वह हिस्सा है जिसका दाम श्रमिकों को नहीं मिला। क्रांतिकारी बदलाव लाने की बात करने वाले कितने ही चैनलों और संगठनों को ये चंदा ग्रहण करने के तुरंत बाद दन्त विहीन होते देखा है। फंडिंग प्राप्त होते ही दहाड़ने वाले शेर मिमियाने लगते हैं। बात-बात में चे ग्वेरा के कोटेशन बोलने वाले इंक़लाब की डींगें मारने वाले; खाते में माल जमा होने की सूचना मिलते ही गांधीवादी-विनोबाभावेवादी बन जाते हैं। पैसे का ये चढ़ावा, इसीलिए चढ़ाया जाता है।

ये पैसा, फ़्लैट-नवीनीकरण में ना लगे या क़ानूनी-फ़ीस देने में इस्तेमाल ना हो ये हो ही नहीं सकता। नवीनीकरण में ही नहीं ऐसे पैसे से फ़्लैट खरीदने वाले क्रांतिकारियों को उस फ्लैट पर क़ब्ज़े के लिए दो-फाड़ हो जाते और फिर एक दूसरे पर 'वर्ग-शत्रु' की तरह टूट पड़ते हुए देखा है।

एनजीओ वाले गोरखधंधे में मुब्तिला लोगों चाहें वे दाता हों या पाता सभी की नीयत पर शक ही नहीं उसे दूषित क़रार दिया जाना चाहिए। ऐसे लोगों को क्रांति की लफ्फाज़ी तो तुरंत बंद कर देनी चाहिए। वे, लेकिन ऐसा नहीं करेंगे क्योंकि ऐसा करते ही फंडिंग बंद पड़ जाएगी।

फासिस्टों का असली ख़ूनी रूप तब सामने आता है जब वे हार रहे होते हैं। मोदी सरकार चुनाव के ज़रिए 2024 में वापस सत्ता में नहीं आने वाली। फासिस्ट जमात चुनाव के ज़रिए सत्ता में आ तो जाती है, जाती नहीं; इतिहास हमें यह सिखाता है। इसीलिए कोई भी, कभी भी गिरफ्तार हो सकता है। गिरफ्तारियों से डरना बंद करो। अपना एका फौलादी बनाओ सड़कों पर उतरो, संघर्ष करो। हम इतिहास के बहुत दिलचस्प दौर में प्रवेश कर चुके हैं। हर एक रीढ़ परखी जाएगी। गोरख पांडे की ये कविता आजकल हर रोज़ याद आती है;

वे डरते हैं किस चीज़ से डरते हैं वे
तमाम धन-दौलत
गोला-बारूद पुलिस-फ़ौज के बावजूद ?
वे डरते हैं कि एक दिन
निहत्थे और ग़रीब लोग
उनसे डरना बंद कर देंगे

शोषण की ज़हरीली बेल में कई तरह के ज़हरीले कांटे होते हैं। इन कांटों को कहां तक काटते बैठेंगे दुनिया के कमेरों को इस बेल को ही उखाड़ फेंकना होगा।

काले धन की थोक हेराफेरी यहां है; ईडी जी कार्यवाही कीजिए

'न्यूज़ क्लिक' को, नोवेल राय सिंघम नाम के धन-पशु से, 10 करोड़ रु की विदेशी 'मदद' मिली. 'दान-दाता' का, चीन से संबंध है, मतलब चीन का एजेंडा चलाया जाएगा. इसलिए न्यूज़ क्लिक की तथाकथित आतंकी गतिविधियों रोकने के नाम पर यूएपीए लगेगा, तो इन अपराधियों को कौन से क़ानून के तहत और कब गिरफ्तार किया जाएगा, श्रीमान एन्फोर्समेंट डायरेक्टर साहब?

1) अडानी के काले और फ्रॉड साम्राज्य में, चीनी ठग च्यांग चुंग लिंग और उसके बेटे च्यांग चुंग टुंग का प्रचंड पैसा लगा है. ये महज़ आरोप नहीं हैं, बल्कि ओसीसीआरपी रिपोर्ट में ठोस सबूत के दस्तावेज़ उपलब्ध हैं. मारीशस और बरमूडा फण्ड के ज़रिये भी अडानी ने लाखों करोड़ के घोटाले किए हैं. 20,000 करोड़ के निवेश का तो ये भी पता नहीं कि उसका मालिक कौन है? मोदी सरकार बनने से पहले, राजस्व खुफ़िया विभाग, अडानी के महा घोटालों के सबूतों की सीडी बना चुका था. वह गिरफ्तार होने वाला था. तीनों अडानी भाईयों को तत्काल गिरफ्तार कर जेल में डालो. उनके पासपोर्ट ज़ब्त करो, बाहर भाग जाने वाले हैं.

2) 'पनामा पेपर्स' और 'बरमूडा फंड्स' के नाम से, दो रिपोर्ट प्रकाशित हुई थीं, जिनमें उन मुफ्तखोर घोटालेबाजों के नाम थे, जिन्होंने अपने चोरी के काले पैसे को सफ़ेद किया, टैक्स चुराया, घोटाले किए. देश के सभी कुख्यात घोटालेबाज, जैसे अमिताभ बच्चन, उस फ्रॉड में लिप्त थे. दुनियाभर में कहीं भी, पनामा पेपर्स को, इतनी बेशर्मी से नहीं दबाया गया, जैसा मोदी सरकार ने किया. पड़ौसी पाकिस्तान का भूतपूर्व प्रधानमंत्री, उसी गुनाह की सज़ा के तहत मुल्क़ बदर किया जा चुका है, लेकिन सभी बड़े घोटालेबाजों की हमदर्द, मोदी सरकार ने, उनमें से किसी का भी बाल बांका नहीं होने दिया. असली चोर, या यूँ कहें, चोरों का सरदार कौन है?

3) संघ परिवार को अमेरिका से भारी-भरकम डोनेशन मिलती है. 2 अप्रैल, 2021 की अल-ज़ज़ीरा की रिपोर्ट के अनुसार, कोरोना महामारी के वक़्त, विश्व हिन्दू परिषद को 8.33 लाख डॉलर (ऋह्य.6,93,47,250) की डोनेशन, इसलिए प्राप्त हुई, कि वे कोरोना महामारी में गरीबों की मदद करेंगे. अमेरिका का शातिरपना भी देखिए, विश्व हिन्दू परिषद को, सीआईए ने हिन्दू आतंकी संगठन भी घोषित किया हुआ है और पैसे की सप्लाई नहीं रोक रहे. क्या वीएचपी से पूछा गया, कि उन्होंने कोरोना महामारी में, किस-किस का कल्याण किया? ये लोग तो, बेरोज़गार युवकों को त्रिशूल और कट्टे थमाते हैं कि जाओ बेटा, हिन्दू शूरवीरो, मुसलमानों पर टूट पड़ो. ईडी के दिल में, हिन्दुत्ववादी आतंकी संगठनों की फंडिंग की जाँच करने की इच्छा, कभी क्यों जागृत नहीं होती? ईडी समेत, सारा देश, इस सवाल का उत्तर जानता है.